कभी–कभी भगवान् को भी.....

कभी–कभी भगवान् को भी भक्तों से काम पड़े,
जाना था गंगा पार प्रभु केवट की नाव चढ़े।

अवध छोड़ प्रभु वन को धाये, सियाराम लखन गंगा तट आये
केवट मन ही मन हर्षाये, घर बैठे प्रभु दर्शन पाए
हाथ जोड़ कर प्रभु के आगे, केवट मगन खड़े
जाना था गंगा पार.....

प्रभु बोले तुम नाव चलाओ, पार हमें केवट पहुँचाओ
केवट बोला सुनो हमारी, चरण धूलि की माया भारी
मैं गरीब नैया मेरी, नारी न होय पड़े
जाना था गंगा पार.....

केवट दौड़ के जल भर लाया, चरण धोय चरणामृत पाया
वेद ग्रंथ जिनके यश गाये, केवट उनको नाव चढ़ाये
बरसे फूल गगन से ऐसे, भक्त के भाग्य जगे
जाना था गंगा पार.....
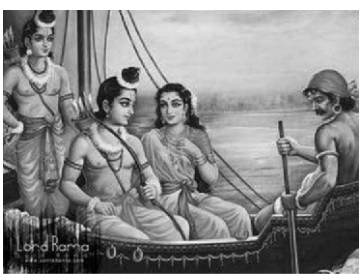
चली नाव गंगा की धारा, सीया राम लखन को पार उतारा
प्रभु देने लगे नाव उतराई, केवट कहे नहीं रघुराई,
पार किया मैंने तुमको, अब तू मोहे पार करें
जाना था गंगा पार.....